RDC-2004

सत्यमेव जयते

Cultural Pageant

सांस्कृतिक प्रस्तुति

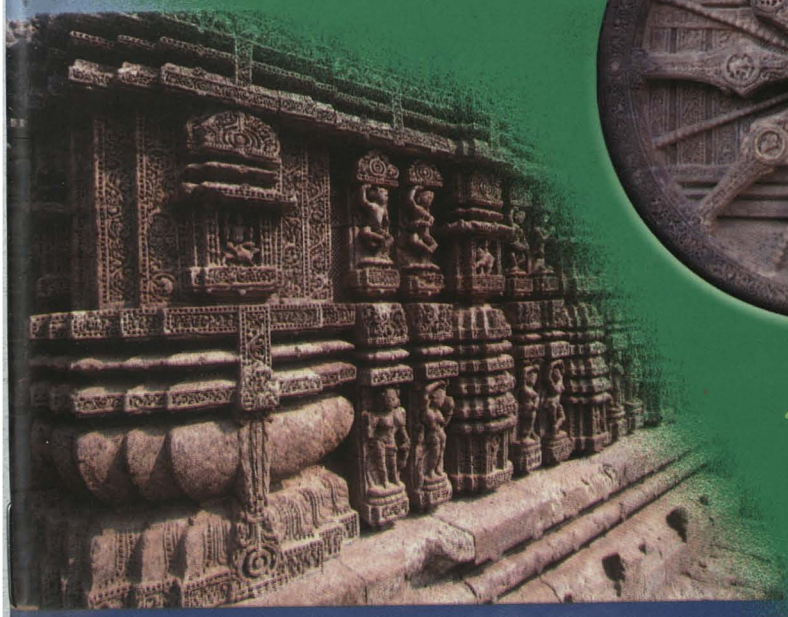

प्रस्तावना

आज भारत गणतंत्र दिवस की 54वीं वर्षगांठ मना रहा है। इस सांस्कृतिक प्रस्तुति में भारतीय सभ्यता और संस्कृति की कुछ प्रमुख विशेषताओं के साथ-साथ विकास और उन्नति की दिशा में राष्ट्र की योजनाओं की झांकी भी प्रस्तुत की गई है। यह प्रस्तुति इस राष्ट्र के निवासियों के सपनों और आकांक्षाओं का भी चित्रण है।

इन रंगारंग झांकियों में भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की प्रगति का प्रभावशाली चित्रण किया गया है। इनमें दृढ़निश्चय तथा देशभक्ति की भावना से परिपूर्ण राष्ट्रीय एकता तथा राष्ट्रीय भावना का चित्रण किया गया है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हमारी प्राचीन सभ्यता, साम्प्रदायिक सौहार्द, विश्व को शांति का संदेश, सांस्कृतिक विविधता तथा उन्नति की झलक है जो कि अपने गौरवपूर्ण अतीत पर हमारे गर्व, हमारे समृद्ध तथा प्रगतिशील वर्तमान पर हमारी खुशी तथा उज्जवल भविष्य के लिए हमारी अभिलाषाओं की भी अभिव्यक्ति है।

स्कूली बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रमों में राष्ट्र के लिए उनके प्रेम और समर्पण का चित्र है। नई सहस्राब्दि में भारत को महान् राष्ट्र बनाने की अपनी आकांक्षाओं की प्राप्ति के प्रति हमारे देश के युवा दृढ़ प्रतिज्ञ हैं।

Introduction

Today India is celebrating the 54th anniversary of the Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of some of the significant signposts of the Indian civilization and culture along with the Nation's plans for development and progress. The pageant also reflects the dreams and aspirations of its people.

An array of colourful tableaux depicts an impressive display of social, cultural, economic and technological facets of India. The underlying theme of togetherness and the spirit of our nation, suffused with determination and patriotism are painted. The cultural pageant also depicts a glimpse of our ancient civilization, communal harmony, message of peace to the world, cultural diversity and progress symbolizing our pride in our glorious past, celebrating our vibrant & dynamic present and aspiring for a better tomorrow.

The cultural programmes presented by the school children symbolize their love and dedication for the nation. The youth of our country have a strong determination to achieve their aspirations of making India a great nation in this new millennium.

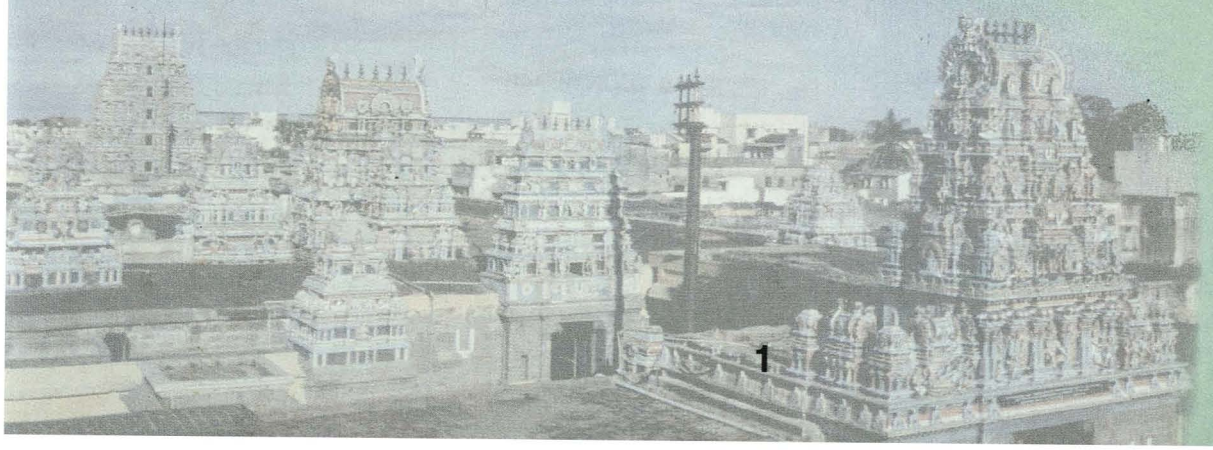

थेय्यम-केरल की परंपरागत लोक नृत्य कला

"थेय्यम"-उत्तरी केरल का अति महत्वपूर्ण धार्मिक लोक नृत्य है जिसे वर्ष में मई से दिसंबर तक फसल की कटाई के दौरान 'कावूस' के मंदिरों में मनाया जाता है। थेय्यम का अभिनय नयनाभिरंजन है। भड़कीले और चटकीले रंग के परिधान में सजे-संवरे चेहरे का प्रभावशाली चित्रण और चेंडा तथा चेंगिला के उन्मत्त कर देने वाले संगीत के साथ तालबद्ध नृत्य मंत्रमुग्ध कर देता है।

केरल की झांकी में केरल के परंपरागत लोक नृत्य - थेय्यम को प्रस्तुत किया गया है। झांकी के अग्र और पृष्ठ भाग में थेय्यम के दो अलग-अलग रूपों को दिखाया गया है। झांकी में थेय्यम की सुन्दरता बहुत ही आकर्षक रंगों में दिखायी गई है।

Theyyam – the legendry folk performing art form of Kerala

"Theyyam" - the most important ritualistic performing art of Northern Kerala is performed annually from May to December coinciding with the months of harvest and the festivals celebrated in 'Kavus'. Performance of Theyyam is a treat for the eye. Its costumes with rich and sharp colours combined with the powerful look of ornamented face and movements in rhythm with the frenzy music of Chenda and Chengila makes it an enchanting experience.

The tableau of Kerala presents legendry folk dance form of Kerala – Theyyam. Tractor and the rear end of the trailer of the tableau portray two different figures of Theyyam. The beauty of Theyyam is brought out in vibrant colurs in the tableau.

अजंता की गुफा-चित्रकारी

अजंता कला की दुनिया में मानो एक जादुई नाम है। अपनी इस झांकी के माध्यम से महाराष्ट्र द्वारा अजंता की उस गुफा-चित्रकारी का प्रदर्शन किया जा रहा है जिसका स्थान विश्व धरोहरों में है। अपनी विलक्षण नक्काशी, चित्रकारी तथा वास्तुकला के कारण ये अद्‌भुत गुफाएं भारत में सैलानियों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र रही हैं। बलुआ पत्थरों की चट्टानों से निर्मित गुफाओं और मंदिरों की छतों और दीवारो पर उकेरी गई चित्रकारी प्रवेश द्वारों की शोभा बढ़ाती है। इसकी विषय वस्तु बुद्ध के जीवन पर आधारित है। पिछली शताब्दी में गुफाओं की खोज के चमत्कार ने उत्खनन, अनुसंधान और चर्चाओं को एक नया आयाम प्रदान किया। नई पीढ़ी में जागरूकता और समझ आ गई है कि कला की उत्कृष्ट कृतियां मानवीय धरोहर का हिस्सा हैं।

महाराष्ट्र की इस झांकी में छात्रों को अजन्ता के भित्ति चित्रों के चित्र बनाते हुए दिखाया गया है।

The cave paintings of Ajanta

Ajanta is a magic word in the world of Art. Through their tableau, Maharashtra showcases the cave paintings of Ajanta, which are among the World Heritage Sites. The breathtaking caves with their remarkable carvings, paintings and architecture constitute one of the major tourist attractions in India. At the end of the last century, the miracle of the discovery of the caves gave a zest to excavation, research and discussion. These cave temples and shrines scooped out of sandstone rock contains large paintings on Buddist themes on the walls, ceiling and on some of the entrances and sculptures. There is a growing awareness among the enlightened new generations that the great works of art of mankind are part of human heritage.

The tableau of Maharashtra depicts the students making drawings of the frescoes at Ajanta.

महाराष्ट्र

Maharashtra

दशहरा-बस्तर रथ

छत्तीसगढ़ की इस झांकी में छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध आदिवासी क्षेत्र बस्तर का त्यौहार, दशहरा दिखाया गया है। देश के शेष भागों में दशहरे के त्यौहार में रावण पर भगवान राम की विजय का चित्रण होता है, किंतु बस्तर में दशहरा दंतेश्वरी देवी के त्यौहार के रूप में मनाया जाता है, जिसमें समस्त बस्तर के आदिवासी श्रद्धालु पहुंचते हैं और उनका रथ खींचते हैं।

झांकी के अग्र भाग में, एक आदिवासी युवक को आदिवासियों के परंपरागत तथा सांस्कृति समारोहों के दौरान बजाया जाने वाला परंपरागत वाद्य यंत्र 'तुरही' बजाते हुए दर्शाया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में पारंपरिक 'मडिया' नृत्य करते हुए दिखाया गया है। झांकी में श्रद्धालुओं को देवी दंतेश्वरी का रथ खींचते हुए दिखाया गया है।

छत्तीसगढ़

Bastar Rath on Dussehra

The tableau of Chhattisgarh depicts Dussehra festival of Bastar region, a famous tribal area of Chhattisgarh. Also celebrated in other parts of the country, Dussehra festival depicts victory of Lord Rama over Ravana, but in Bastar Dussehra is celebrated as festival of Goddess Danteswari, which attracts tribal devotees from all over the Bastar who joins the celebration by pulling her chariot.

In the tractor, a tribal youth is shown blowing 'TURHI' a traditional musical instrument blown during traditional and cultural functions of the tribes of Chattisgarh. Trailer portion of the tableau showcases live performance of traditional dance 'Madia'. In the tableau people are shown pulling chariot of Goddess Danteswari.

Chhattisgarh

अमीर खुसरो

कला और संगीत के पारखी अमीर खुसरो उस मिली-जुली संस्कृति का प्रतीक हैं, जिसकी जड़ें हमारे गौरवपूर्ण अतीत में हैं। कवि, विद्वान तथा दार्शनिक अमीर खुसरो को अरबी, फारसी और संस्कृत भाषाओं पर समान रूप से विद्वता हासिल थी। 'खड़ी बोली' की उत्पत्ति का श्रेय अमीर खुसरो को दिया जाता है, जिसका विकास कालांतर में हिंदी और उर्दू भाषाओं के रूप में हुआ।

दिल्ली की इस झांकी में इस महान् कवि, विद्वान और दार्शनिक को, उनकी काव्य-प्रतिभा की प्रतीक कविता की एक पुस्तक के साथ, विशाल त्रि-आयामी प्रतिमा दर्शाई गई है। दीपक प्रतीक है साहित्य को उनके योगदान का। झांकी के पृष्ठ भाग में अमीर खुसरो की रचना 'बाबुल' से ''काहे को बियाही बिदेश, लखया बाबुल मोरे''... नामक प्रसिद्ध पंक्तियां गाते हुए अपनी सखियों से घिरी हुई एक दुल्हन को दिखाया गया है। झांकी के सबसे पीछे, खुसरो के मकबरे की एक प्रतिकृति है, जिसमें खुसरो द्वारा लिखे गीत गाते, इस महान् प्रतिभा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए लोगों को दिखाया गया है।

दिल्ली

Amir Khusro

A connoisseur of art and music, Amir Khusro represents a composite culture, which is rooted in our glorious past. Amir Khusro – a poet, scholar & philosopher had a profound knowledge of Arabic, Persian and Sanskrit languages alike. The origin of 'KHARI BOLI' is attributed to Amir Khusro which later developed into Hindi and Urdu.

The tableau of Delhi showcases a huge sculptured three dimensional image of this great poet, scholar & philosopher along with a book of verse representing Amir Khusro's poetic genius. The candle reflects his precious contribution in the sphere of literature. Trailer portion of the tableau depicts a bride surrounded by her playmates singing famous lines from **'BABUL'** of Amir Khusro: *"Kahe Ko biyhai bides, Lakhya Babul more..."* In the rear end of the trailer, there is a replica of Khusro tomb and people are seen paying their homage to this great genius by singing songs written by Khusro himself.

NCT Delhi

पर्यावरण तथा नारियल

लक्षद्वीप की झांकी में पर्यावरण तथा नारियल को और लक्षद्वीप के लोगों के लिए इनके महत्व को प्रदर्शित किया गया है। लक्षद्वीप के तहत आने वाले विभिन्न प्रवाल-द्वीप नारियल की खेती के लिए बहुत उपयुक्त हैं। प्रत्येक द्वीप नारियल का एक बगीचा है। तालवृक्ष लक्षद्वीप को प्रकृति का भरपूर तोहफा है जिसमें नारियल लगते हैं और जो वहां के निवासियों को भोजन और आश्रय देने में सक्षम हैं। ये तालवृक्ष इस द्वीप के पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाए रखने में भी सहायक हैं तथा उनकी छाया वहां के निवासियों को हानिकारक किरणों से बचाती है।

झांकी के अग्र भाग में एक वृहत नारियल को दिखाया गया है। इसके पृष्ठ भाग में नारियल के एक बगीचे को उसके नाना-रंगों में दर्शाया गया है। मानव और प्रकृति एक हैं और वे हमारे देश के इस रमणीय भाग में एक ही बने रहेंगे।

लक्षद्वीप

Environment and Coconut

The tableau of Lakshadweep depicts environment and coconut and its significance to the people of Lakshadweep. The coral islands that constitute Lakshadweep are best suited for coconut cultivation. Each island is a coconut garden. Nature's abundant gift to Lakshdaweep the palm tree that bears coconut is capable of providing food and shelter to the population. These palm trees also help in maintaining the ecological balance of the island and their canopy help the inhabitants from harmful rays.

The tractor portion depicts a larger than life coconut. In the trailer portion, a coconut garden is shown with all its hue and colors. Man and nature are one and they will remain one in this beautiful part of our country.

Lakshadweep

प्रगतिशील गुजरात

गुजरात की इस झांकी की विषय-वस्तु दो महत्वपूर्ण पहलुओं - गुजरात की रंगारंग संस्कृति और उसके वाणिज्यिक तथा औद्योगिक विकास पर आधारित है। झांकी में यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि तेजी से हो रहे औद्योगिकीकरण तथा आधुनिकीकरण के बीच इस राज्य ने त्यौहार, खान-पान, वाणिज्य, शांति के लिए आध्यात्मिक तलाश, विनम्रता और सांसारिक कल्याण के क्षेत्र में अपनी भौगोलिक, सांस्कृतिक और जातीय पहचान नहीं खोई है।

गुजरात की झांकी में तीन प्रमुख क्षेत्रों को दर्शाया गया है जो अपरिष्कृत रेशम से रंग-बिरंगी रेशमी फुलकारी में, अविरंजित धागे से सुनहरे तारों में, पेड़ों पर रंग-बिरंगी पतंगों से झुंड में थिरकते हुए लोगों में परिवर्तित होते दिखाई देते हैं। झांकी के अग्रभाग में दस्तकारों को हीरे और सोने के जेवरात गढ़ते हुए दिखाया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में महात्मा गांधी की शाश्वत परिकल्पना और इस भू-भाग की आत्मा खादी, जो आज और भी अधिक प्रासंगिक है, को दिखाया गया है।

गुजरात

Vibrant Gujarat

The theme of Gujarat's tableau is based on the two vital elements – Gujarat's vibrant culture and its commercial & industrial growth. The tableau of Gujarat attempts to show that amidst rapid industrialization and modernization, the State has not lost its geographical, cultural and ethnic identity be it festivals, cuisines, commerce, spiritual quest for peace, modesty and down to earth approach to material well-being.

The tableau of Gujarat showcases three thrust areas metamorphing from one to the other, from coarse to silky vignettes of colour, from unbleached yarn to golden wires, from colorful kites on trees to people collectively dancing vibrantly. In the tractor artisans are seen busy crafting diamond & gold jewellery. Khadi, the spirit of the land and Mahatma Gandhi's eternal vision, even more relevant today is seen on the trailer.

Gujarat

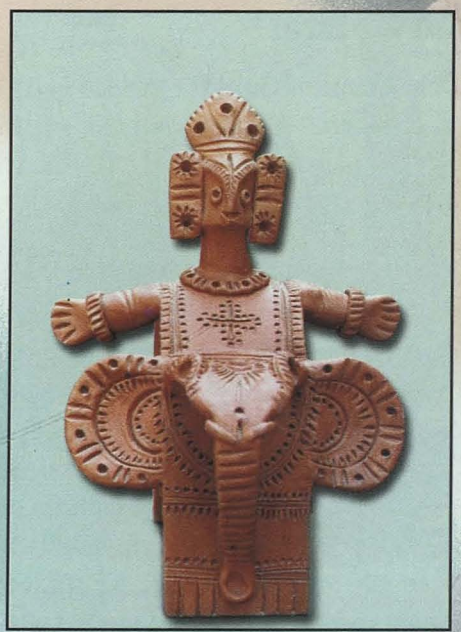

Folk Toys of Assam

Assam with its diverse ethnic and cultural streams is a repository of amazing wealth of folk traditions. The traditional folk toys of Assam have been an essential part of folk culture and it is a means of artistic expression and as such labour of love.

The tableau under the caption: "Folk toys of Assam" presents the indigenous folk toys made of clay, which occupy the foremost place both from the point of number and variety. The category of human figures includes bride and groom toys and women both with and without children. The attractive mother and child terra-cotta toy figure is an excellent emotional theme having universal appeal. This particular toy gives the impression of massive sculptural composition. In the category of animals, figures of elephant, horse, buffaloe, deer and bird are most common.

The tableau of Assam highlights the cultural heritage of Assam.

Assam

असम के लोक खिलौने

असम, अपनी अनेकानेक जातीय तथा सांस्कृतिक विविधताओं के साथ लोक परंपराओं का एक अद्‌भुत खजाना है। असम के परंपरागत लोक खिलौने लोक संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा रहे हैं और स्वान्त:सुखाय कलात्मक अभिव्यक्ति का साधन हैं।

''असम के खिलौने'' शीर्षक की इस झांकी में मिट्‌टी से बने स्थानीय लोक-खिलौने प्रस्तुत किए गए हैं, जो संख्या और विविधता दोनों की दृष्टि से पहले स्थान पर हैं। मानवीय आकृतियों की श्रेणी में दुल्हन और दूल्हा तथा बच्चों सहित और बच्चों के बिना महिला खिलौने शामिल हैं। टेरा-कोटा की मां और बच्चे की लुभावनी आकृति एक शानदार भावनात्मक कृति है जिसमें सर्वव्यापी आकर्षण है। यह खिलौना शानदार मूर्तिकला का प्रतीक है। पशु श्रेणी में हाथी, घोड़े, भैंस, हिरण तथा पक्षी सबसे आम हैं।

असम की यह झांकी असम की सांस्कृतिक विरासत को दर्शाती है।

असम

चट्टान काटकर बना मंदिर संकुल - मसरूर

हिमाचल प्रदेश की झांकी में मसरूर में चट्टान काटकर बनाए गए मंदिर संकुल को प्रस्तुत किया गया है। हिमालय क्षेत्र में स्थित यह अति दर्शनीय मंदिर समूह कांगड़ा जिले के मसरूर में एकल-प्रस्तर मंदिर श्रृंखला है जो इस क्षेत्र में चट्टान-तराश वास्तुकला का एकमात्र उदाहरण है। मसरूर मंदिर समूह प्रायद्वीपीय भारत की परंपराओं को आगे बढ़ाता है जो कि सजावटी और गढ़े गहनों से सज्जित प्राचीन नागर शैली का अलंकृत नमूना है। ''भगवान शिव'' को समर्पित यह मंदिर हिमालयी क्षेत्र में शिखर डिजाइन का प्राचीनतम् नमूना है।

झांकी के पृष्ठ भाग में, चंबा जिले के दूर-दराज इलाकों से इकट्ठा हुए 'गद्दियों' को मंदिर के अहाते में 'शिवरात्रि' का मेला मनाते हुए दिखाया गया है।

Rock-Cut Temple Complex, Masrur

The Tableau of Himachal Pradesh presents rock-cut Temple Complex at Masrur. A most remarkable temple group in the Himalayan region is represented by a series of monolithic temples at Masrur in Kangra District representing solitary instance of rock-cut architecture in the region. Masrur temple group carries forward the traditions of peninsular India, which has highly ornate specimens of early Naggar style laden with decorative and figural ornaments. The temple dedicated to "Lord Shiva" is the earliest specimen of Shikhra design in Himalayan region.

In the trailer portion, *Gaddies* gathered from far-flung areas of Chamba District are seen celebrating **"Shivratri"** fair in the precinct of temple.

हिमाचल प्रदेश

Himachal Pradesh

हॉर्नबिल उत्सव

नागालैंड 'नागा' लोगों की भूमि, जिसे त्यौहारों की भूमि भी कहा जाता है – वर्ष भर चलने वाले एक के बाद एक त्यौहारों का प्रदेश है। सैलानियों/पर्यटकों को एक ही जगह पर एक ही बार में सभी नागा त्यौहारों की झलक मिल सके इसके लिए नागालैंड सरकार ने हॉर्नबिल नामक उत्सव का आयोजन शुरू किया है जिसे प्रतिवर्ष कोहिमा में 1-5 दिसंबर तक मनाया जाता है। हॉर्नबिल उत्सव समृद्ध नागा धरोहर तथा परंपराओं को पुर्नजीवित करने, उन्हें संरक्षित करने तथा आगे बनाए रखने के उद्देश्य से मनाया जाता है तथा यह एक दर्शनीय सांस्कृतिक रंगारंग उत्सव है।

नागालैंड की झांकी में प्रदर्शनियों तथा कलाकृतियों की बिक्री के माध्यम से हॉर्नबिल उत्सव का उल्लासमय वातावरण चित्रित किया गया है। इसके अग्रभाग में सीढ़ीदार खेती दर्शाई गई है जो कि इस राज्य की विशेषता है। नागा लोगों के लिए परम्परा से अत्यन्त महत्व रखने वाले हॉर्नबिल पक्षी को विशेष आकर्षण के रूप में दर्शाया गया है।

Hornbill Festival

Nagaland known as the land of 'Naga' people is also the land of festivals with one festival followed by another throughout the year. In order to facilitate tourists/ visitors to have a glimpse of all the Naga festivals at one time and one place, the Government of Nagaland has evolved a festival called Hornbill Festival, which is celebrated from December 1-5 at Kohima every year. Hornbill Festival aimed at reviving, protecting and sustaining the richness of the Naga heritage and traditions is a cultural extravaganza worth experiencing.

The tableau of Nagaland depicts the lively atmosphere of the Hornbill Festival with exhibitions and sale of artefacts. The tractor portion shows the terrace cultivation which the state is well known for. The Hornbill bird which is traditionally very significant to the Nagas is depicted as eye catcher.

आर्यभट्ट-महान वैज्ञानिक

बिहार की भूमि को महिमा प्रदान करने वाले महान गणितज्ञ और ज्योतिषी प्रकांड विद्वान आर्यभट्ट को उनके क्रांतिकारी आविष्कारों के लिए जाना जाता है। 476 ई. में कुसुमपुर (वर्तमान में बिहार राज्य की राजधानी पटना) में जन्में इस महान वैज्ञानिक ने 23 वर्ष की आयु में 'आर्यभट्ट' नामक प्रसिद्ध पुस्तक की रचना की थी। इस पुस्तक के चार खंड हैं—अर्थात् *गतिकापद, गणितापद, कालक्रियापद तथा गोलापद,* जिनका संबंध अंकों; सूत्रों व अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित के नियमों; दिन, माह, वर्ष तथा युग और सूर्य, चंद्र तथा नवग्रहों से है। आर्यभट्ट दो प्रसिद्ध पुस्तकों-*दशगीति सूत्र* तथा *आर्यभट्ट सिद्धांत* के लिए भी संपूर्ण संसार में जाने जाते हैं। वे संसार के पहले ऐसे वैज्ञानिक थे जिन्होंने अपनी अंकगणितिय और ज्योतिषीय गणनाओं के माध्यम से यह सिद्ध किया था कि पृथ्वी गोल है, अपनी ही धुरी पर घूमती है, जिससे दिन और रात होते हैं।

बिहार की इस झांकी में अंकगणित, विज्ञान तथा ज्योतिष के क्षेत्र में इस महान वैज्ञानिक के योगदान के लिए उन्हें श्रृद्धांजलि देने का प्रयास किया गया है। झांकी के अग्र भाग में आर्यभट्ट का आविष्कार - पृथ्वी को सूर्य का चक्कर लगाते हुए - दिखाया गया है। इसके पृष्ठ भाग में अनुसंधान तथा खोज का एक दृश्य दर्शाया गया है।

बिहार

Aryabhatta – the Genius Scientist

The great mathematician and astrologer Aryabhatta, one of the luminaries glorifying the land of Bihar is known for his revolutionary inventions. Born in Kusumpur (present day Patna, the capital of Bihar State) in 476 A.D., the great scientist has authored the famous book called *ARYABHATTA* at the age of 23. This book contains four parts viz. *Gatikapada, Ganitapada, Kalakriyapada* and *Golapada* which deals with digits; formulae & rules of arithmetic, algebra and geometry; day, month, year and Yuga; and the Sun, the moon and the Navagrahas respectively. Aryabhatta is also known worldwide for the two famous books – *Dashgiti Sutra* and *Aryabhatta Siddhant*. He was the first scientist of the World who proved through his mathematical and astrological calculations that the earth is round and its rotation on its axis causes day and night.

The tableau of Bihar attempts to pay tribute to this great scientist for his contribution in the sphere of mathematics, science and astrology. The tractor portion depicts the invention of Aryabhatta – the earth revolving round the sun. The trailer portion showcases a scene of research and discovery.

Bihar

जम्मू-कश्मीर और लद्दाख का नृत्य

कश्मीर के बहुत से प्राचीन मंदिरों में पाया जाने वाला तिपतिया मेहराब भारत के इस सबसे उत्तर में स्थित राज्य का प्रतीक है जिसमें तीन विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र अर्थात् जम्मू, कश्मीर और लद्दाख शामिल हैं, जिन्हें अपनी समृद्धि और मिली-जुली सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। कला, संगीत और नृत्य हमेशा इन क्षेत्रों में फलते-फूलते रहे हैं। इन क्षेत्रों, विशेषकर कश्मीर में 'रफ' जम्मू में 'धेकु' और लद्दाख में 'मोत्सेस' लोक नृत्य धार्मिक उत्सवों, फसल कटाई के मौसम या सामाजिक रीति-रिवाजों के दौरान किए जाते हैं।

जम्मू-कश्मीर की झांकी में अनेकता में एकता के प्रतीक इन नृत्यों में अंतर्निहित मौलिक सुंदरता का प्रदर्शन किया गया है।

Dance of Jammu and Kashmir and Ladakh

The Trefoil arch found in many ancient temples of Kashmir appears to symbolize the northernmost states of India, which comprises three distinct geographical regions viz. Jammu, Kashmir and Ladakh known for its rich and composite cultural heritage. Art, music and dance has always grown in these regions. Folk dances of these regions mainly 'RUFF' in Kashmir, 'DHEKU' in Jammu and 'MOTSES' in Ladakh are performed during religious festivals, harvest season or social customs.

The tableau of Jammu and Kashmir displays the pristine beauty inherent in these dances symbolizing harmony in diversity.

जम्मू-कश्मीर ***Jammu and Kashmir***

पंजाब का *सम्मी* लोक नृत्य

महिलाओं द्वारा किए जाने वाले पंजाब के लोकप्रिय लोकनृत्य *'सम्मी'* का नामकरण *सम्मी* नाम की युवती के नाम पर किया गया है जो अपने प्रेमी से अत्यधिक प्यार करती थी और उसी के लिए नाचती तथा गाती थी। यह आसान-सा नृत्य है। अधिकतर भंगिमाएं हाथों को मुद्राओं, पैरों की तालों, तथा तालियों तक सीमित हैं। इस नृत्य में नृतक गोला बनाकर खड़े होते हैं तथा बगल से अपने हाथों को घुमाते हुए ठीक सामने छाती तक लाकर ताली बजाते हैं। वे लय तथा ताल के साथ हाथों को नीचे लाते हैं तथा पुनः ताली बजाते हैं। इसी मुद्रा को दोहराते हुए वे आगे की ओर झुकते हुए पुनः ताली बजाते हैं तथा गोलाई में घूमते हैं तथा यह लय पैरों की ताल के साथ मिलाई जाती है। पैरों की गति तथा तालियों की ताल में लयबद्धता बनाई रखी जाती है।

पंजाब की झांकी में इस रंगारंग लोकप्रिय लोक-नृत्य की एक झलक प्रस्तुत है।

Sammi - Folk Dance of Punjab

'Sammi', a popular folk dance form of Punjab performed by the women is named after a young heroin named Sammi, who was madly in love and used to sing and dance for the sake of her lover. This is a very simple dance. Most of the gestures are confined to the movements of the arms, clicking and clapping. In this dance, the dancers stand in a ring and swing their hands bringing them up from the sides, right in front, up to the chest and clap. They take the hands down in accordance with rhythm and a system and clap again. Repeating the gesture, they bend forward and clap again and go round in a circle, as the rhythm is maintained with the beat of the feet. Rhythm is kept up with the beating of feet and clapping.

The tableau of Punjab gives a glimpse of this popular folk dance with all its colors.

गोवा के वाद्ययंत्र

प्रत्येक गोवावासी के रक्त में संगीत प्रवाहमान है। संगीत की शैली में अभिनव विकास ने गोवा के संगीत को पूर्वी तथा पश्चिमी संगीत के कर्णप्रिय मिश्रण का रूप दे दिया है। मिट्टी का बना हुआ अद्‌भुत वाद्ययंत्र 'घूमट' मानो गोवा की लाल मिट्टी की धड़कनों का प्रतीक है। घूमट को ग्रामीण इलाकों में शहनाई, सुर्त, शामेल, म्हाधेल, कासेल, ढोल, ताशा जैसे शास्त्रीय तथा लोक वाद्ययंत्रों और शहरी क्षेत्रों में गिटार, वायलिन तथा तुरही के साथ बजाया जाता है। शास्त्रीय, लोक या पश्चिमी संगीत के साथ इसके प्रयोग की क्षमता से घूमट के बहुमुखी प्रयोग का अंदाजा लगाया जा सकता है। यह गोवावासियों के जीवन को संगीतमय बना देता है। 'सुवारी' या 'मोनीचाल' एक विशेष प्रकार का संगीत है, जिसे समस्त गोवावासियों द्वारा बजाया जाता है चाहे वे किसी भी धर्म, जाति व समुदाय के हों।

गोवा की झांकी में गोवावासियों के विभिन्न वाद्ययंत्र जैसे घूमट, शामेल या म्हाधेल और कासेल दिखाए गए हैं।

Musical Instruments of Goa

Music flows into the blood of every Goan. Classical evolution in style of musical forms successfully blends the East and the West in Goan music. **'Ghumat',** a unique earthen folk music instrument of Goa expresses the heart beats of Goan Red Soil. Ghumat goes with classical and folk instruments like Shehnai, Surt, Shamel, Mhadhale, Kassale, Dhole, Tasha in the rural areas and is tuned with Guitar, Violin and Trumpet in the urban areas. The versatility of Ghumat is evident from its adaptability to Classical, Folk, or Western vogue. It provides rhythm to the life of a Goan. *Suvari* or *Monichal* is a peculiar form of music being played by all Goans irrespective of religion, cast and community.

The tableau of Goa depicts various musical instruments of Goan viz. Ghumat, Shamel or Mhadhale and Kassale.

बनारस का रेशम

उत्तर प्रदेश की झांकी में बनारसी रेशम कला और ज़रदोज़ी को बहुत ही आकर्षक ढंग से दर्शाया गया है। जरदोज़ी का मतलब है चांदी और सोने के तारों से कपड़े पर कलात्मक बुनाई। आगरा, बनारस और लखनऊ का 'ज़री', 'करचोबी', 'कामदानी' और 'फरदी' का काम बहुत ही लोकप्रिय है। बनारस की कसीदाकारी (ज़री) की साड़ियों पर आधारित हथकरघा उद्योग उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा, मूल्यवान और कलात्मक उद्योग है। बनारस की रेशम तथा कसीदाकारी सम्बन्धी कारीगरी का इतिहास बहुत पुराना है। भारत विश्व के प्रमुख रेशम उत्पादक देशों में से एक है। वास्तव में हथकरघों पर सपने बुनते भारतीय बुनकर पूरे विश्व के डिजायनरों के आकर्षण का केंद्र बन गए हैं। बनारस का रेशमी कपड़ा तथा कसीदाकारी बहुत प्राचीन है तथा रेशम की दुनिया में बनारसी रेशम को शानदार तथा गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। बनारसी रेशम मोहक, ठाठदार तथा रोमानी अंदाज लिए हुए है। एक कीट के रेशे से निकला यह आकर्षक कपड़ा देश में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में लोगों की पोशाकी-चाहत का केंद्र है। महीन चमक-दमक लिए हुए मशहूर बनारसी रेशम अपनी रंगारंग आभा के लिए विख्यात है।

Banaras Ka Silk

The tableau of Uttar Pradesh showcases the Banaras Silk Craft and Zardozi. 'Zardozi' means artistic weaving with silver and gold thread on a cloth. 'Zari' 'Karchobi', 'Kamdani' and 'Fardi' works of Agra, Banaras and Lucknow are immensely popular. The handloom industry based on embroidered (zari) saris of Banaras is the largest, valuable and artistic industry of Uttar Pradesh. Silk and embroidery work of Banaras dates back to the time of yore. India is one of the major silk producing countries of the world. In fact, weaving dreams on the looms, the Indian weavers have captured centre-stage of designer's world. Banarasi silk whispers of the exotic, the luxurious and the romantic. This sensuous cloth, conjured from the strand of a worm have a great appeal to the sartorial desires of the people not only in the country but also in the world over. Synonymous with sleek splendor, Banarasi silk is sibilant with lustre.

उत्तर प्रदेश

Uttar Pradesh

कालिदास की उज्जैनी

भारत का सनातन शहर उज्जैनी (आज का उज्जैन), अपने गौरवशाली इतिहास के दौरान अशोक, विक्रमादित्य तथा आदिकवि कालिदास जैसी अमर विभूतियों के साथ विभिन्न परिवर्तनों एवं अद्वितीय क्षणों का साक्षी रहा है। भारत की भौगोलिक और मानवीय अनेकता का गान कालिदास की कालजयी रचना 'मेघदूतम्' भारतीय साहित्य के महानतम् महाकाव्यों में से एक है। इस अमर महाकाव्य में यक्ष का अपनी प्रेयसी के प्रति आसक्ति का चित्रण किया गया है। बादल उनके संदेशवाहक हैं, परंतु यक्ष की यह चाहत कवि की कल्पना को प्रदेश के अनुसार बदलती जाती है, कहीं यह प्रकृति से मानव का बंधन है, कहीं हृदय से बुद्धि का और कहीं शिव से शक्ति का।

मध्य प्रदेश की इस झांकी में यक्ष के माध्यम से कालिदास द्वारा संगीत के इस जादू के सशक्त चित्रण, आध्यात्मिकता के प्रति श्रद्धा और निरपेक्षता भाव को एक ही स्थान पर चित्रित करने का प्रयास किया गया है। ट्रैक्टर भाग में कालिदास अपनी अमर साहित्यिक कृतियों के साथ दिखाई देते हैं। झांकी के पिछले भाग में महाकालेश्वर के प्राचीन मंदिर का चित्रण किया गया है।

मध्य प्रदेश

Kalidas's Ujjaini

Ujjaini (present day Ujjain), the eternal city of India has witnessed numerous transformations and unparalleled moments in its glorious history because of its association with immortal icons such as Ashoka, Vikramaditya and of course the legendary poet Kalidas. Kalidas's 'Meghdootam' - a celebration of the geographical and human diversity of India is one of the most celebrated epics in Indian literature. An immortal classic, it portrays the longing of Yaksha for his beloved. The clouds are his messengers, but the yearning of Yaksha becomes metaphorical when used by the poet to reach out to other states, for man to bond with nature, for intellect to blend with the heart, and for Shiva to bond with Shakti.

The tableau of Madhya Pradesh attempts to recapture this magic so vividly portrayed by Kalidasa through Yaksha and the reverence of spiritual and celebration of the secular in a single landscape. On the tractor, Kalidas is seen with his immortal literary creations. The temple of Mahakaleshwar is depicted in the trailer.

Madhya Pradesh

सजीव जड़ सेतु

मेघालय के 'खासी' तथा 'जयंतिया' लोग खासकर तूफानी नदी-नालों को पार करने के लिए वृक्षों की सहायक जड़ों से सेतु बनाने की कला में माहिर माने जाते हैं। इन पुलों को स्थानीय भाषा में *जिंकिंग डेंगिरि* कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ है रबड़ वृक्ष का पुल। उन्हें मौसम बदलने के साथ-साथ बढ़ते रहने तथा पत्तियों को गिराने की अपनी क्षमता के कारण सजीव जड़ सेतु के नाम से जाना जाता है। ये सेतु 200 वर्ष से भी अधिक पुराने हैं तथा ये आधुनिक पुलों से भी अधिक टिकाऊ हैं। खासी लोग यह दावा करते हैं कि दुनिया में अन्यत्र कहीं भी ऐसे पुल नहीं हैं। जैव इंजिनीयरी का एक शानदार नमूना, यह दोहरा सजीव जड़ सेतु चेरापूंजी के नांगरियाट में स्थित है।

मेघालय की झांकी में हैरत-अंगेज पर्यावरणीय इंजीनियरी के कारनामे दिखाए गए हैं। झांकी के अग्र भाग में राज्य में पाई जाने वाली खड़ी चोटियां दर्शाई गई हैं। पृष्ठ भाग में रबड़ वृक्षों का एक सजीव जड़ सेतु दर्शाया गया है।

Live Root Bridge

The 'Khasi' and 'Jaintia' people of Meghalaya are known to have the capability of building bridges from secondary roots of trees mainly to cross turbulent rivulets. These bridges are locally known as *Jingkieng Diengiri* literally meaning bridge of the rubber tree. The living root bridge as they are known due to their ability to keep on growing and shedding leaves as the seasons come and go. These structures are over 200 years old and have even outlasted modern bridges. The Khasis claim that nowhere else in the world do such bridges exist. The two tier living root bridge, a marvel of bio-engineering wonder is located at Nongriat at Cherrapunjee.

The tableau of Meghalaya showcases astonishing environmental engineering. The tractor shows steep ridges found in the State. In the trailer a live root bridge made of the rubber trees is shown.

मेघालय

Meghalaya

रथ यात्रा

भगवान जगन्नाथ उड़ीसा के देवी-देवताओं के मुखिया हैं। पुरी के जगन्नाथ मंदिर में देवताओं की जिस तरह आदिकालीन तथा कल्पनातीत ढंग से पूजा की जाती है शायद अन्यत्र कहीं नहीं की जाती। संभवत: भगवान जगन्नाथ ही एक मात्र ऐसे देवता हैं जो जाति, पंथ, धर्म, भाषा जैसी उन सब बातों, जो मानव ने स्वयं को अन्य व्यक्तियों से अलग करने के लिए बनाई हैं, के बंधनों को तोड़कर वर्ष में एक बार सभी को दर्शन देने के लिए अपने पवित्र गर्भ-गृह को छोड़कर धरती पर अवतरित होते हैं। जून-जुलाई के महीनों में भगवान जगन्नाथ पैंतालीस फीट ऊंचे काष्ठ-रथ पर मानवता की नियति पर दृष्टि डालने के लिए अपने सांकेतिक विश्व भ्रमणार्थ विराजमान होते हैं, जिनके अगल-बगल उनके बड़े भाई भगवान बलभद्र तथा उनकी बहन सुभद्रा के रथ होते हैं, जिन्हें उनके श्रद्धालू भक्त खींचते हैं।

उड़ीसा की झांकी में उत्साह से भरे हुए श्रद्धालुओं द्वारा तीन भारी रथों को गुंडिचा मंदिर की ओर खींचने का सजीव चित्रण किया गया है जिनका विजय-नाद आकाश को गुंजायमान कर रहा है।

Rath Yatra

Lord Jagannath is the reigning deity of Orissa. Perhaps nowhere-else are the deities worshiped in such unfinished and inconceivable forms as in the temple of Jagannath at Puri. Lord Jagannath is presumably the only deity, who descends on earth once in a year leaving his sanctum-sanctorum to give Darshan to all – cutting across the barrier of caste, creed, religion, language and all such things man has created to make himself different from other men. In the months of June-July, Lord Jagannath mounts on his forty-five feet high wooden Chariot (Ratha) flanked by Cars of his elder brother Lord Balabhadra and their sister Subhadra to make their symbolic tour of the Universe to study the fate of mankind with faithful devotees pulling them on chariots.

The tableau of Orissa vividly depicts three massive Chariots being pulled to Gundicha temple by the zealous devotees and their yell of triumph reverberating in the air.

भारत-नेपाल एवरेस्ट ल्होत्से पर्वतारोहण

साहसिक भावना को प्रोत्साहित करने में सदैव अग्रणी भारतीय सेना ने वर्ष 2003 के ग्रीष्मकाल में एवरेस्ट-ल्होत्से शृंखला पर सफल पर्वतारोहण का आयोजन करके एवरेस्ट पर प्रथम विजय की स्वर्ण जयंती मनाई।

झांकी के अग्रभाग में राष्ट्रध्वज तथा सेना के ध्वज को थामे विजयी मुद्रा में पर्वतारोहियों के चित्रण द्वारा भारतीय सेना के अदम्य साहस को दर्शाया गया है। पृष्ठ भाग में पर्वतारोही दल को जलवायु के अनुकूल तैयार करने के लिए बेस कैंपों को खड़े करने का सटीक चित्रण किया गया है। झांकी में प्रसिद्ध खुंबु आइस फाल की प्रतिकृति जो पर्वतारोहियों की दक्षता तथा साहस को परखता है। झूला पुल इस दृश्य को और भी आकर्षक बना देता है। भारतीय सेना की झांकी में बारीकी से योजना बनाने, शारीरिक सहन शक्ति, टीम के रूप में कार्य करने की भावना तथा विश्व के दो सबसे ऊंचे पर्वत शिखरों पर हिम्मत को विचलित कर देने वाली चढ़ाई को दर्शाया गया है।

भारतीय सेना

Indo – Nepal Everest Lhotse Expedition

The Indian Army, always at the forefront to promote the spirit of adventure, celebrated the Golden Jubilee of the first ascent on Everest by launching a successful expedition on Everest – Lhotse Massif in the summer of 2003.

The tractor portion shows the indomitable spirit of the Indian Army by depicting the Summiteers in a triumphant pose holding aloft the National and the Army Flags. The trailer realistically depicts the setting up of base camps to acclimatize the team. A replica of the famous 'Khumbu Ice Fall', which tests the skills and courage of the climbers is depicted. A rope way also adds to the visual impact. The tableau of Indian Army depicts the meticulous planning, the physical endurance, the spirit of teamwork and the nerve tingling ascent on two of the World's highest mountain peaks.

Indian Army

जल विद्युत विकास-स्वच्छ बिजली-हरित बिजली

विद्युत शक्ति की उपलब्धता किसी भी राष्ट्र के विकास तथा उसकी समृद्धि का प्रतीक है। राष्ट्रीय जल विद्युत निगम देश में ताप विद्युत के बाद देश का सबसे बड़ा विद्युत उपक्रम है। प्रकृति का उपहार- जल विद्युत स्वच्छ, सस्ता, प्रदूषण रहित, पुनः प्रयोग योग्य तथा पर्यावरण के अनुकूल उर्जा स्रोत है। जल विद्युत से न केवल कृषि उत्पादन बढ़ता है, बाढ़ जोखिम पर नियंत्रण होता है, पेय जल की आपूर्ति होती है, रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं बल्कि यह परियोजना के आसपास के लोगों के लिए समृद्धि भी लाती है।

विद्युत मंत्रालय की इस झांकी में स्थायी रूप से पर्यावरण के अनुकूल विद्युत का दोहन करने के प्रति राष्ट्रीय जल विद्युत निगम की कटिबद्धता का चित्रण किया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में चारों ओर वनस्पति का आवरण तथा विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल करके आच्छादित क्षेत्रों के सुधार हेतु किए गए उपायों सहित जल विद्युत परियोजना का एक मॉडल दिखाया गया है।

विद्युत मंत्रालय (एन.एच.पी.सी.)

Hydro Power Development – Clean Power – Green Power

Availability of electric power is a symbol of progress and prosperity of a nation. The National Hydroelectric Power Corporation (N.H.P.C.) is the second largest power utility in the country after thermal power. Hydro power – a gift of nature is a clean, cheap, pollution free, renewable and environment friendly source of energy. Hydro power not only increases agricultural productivity, controls the flood menace, supplies drinking water, generates employment opportunities but also enriches the life of the people around the project.

The tableau depicts the commitment of N.H.P.C. to harness eco- friendly power in a sustained manner. In the rear end of trailer portion, a model of hydroelectric power project is shown with vegetative cover and measures taken for catchment area treatment deploying various measures.

Ministry of Power (N.H.P.C.)

बाल शिक्षा

स्वतंत्रता के बाद, स्कूलों, अध्यापकों तथा स्कूलों में भर्ती की संख्या में असाधारण वृद्धि होने के बावजूद बड़ी संख्या में बच्चे अभी भी स्कूल नहीं जा पाते। यहां हजारों बस्तियां ऐसी हैं जहां आज भी कोई स्कूल नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए प्राथमिक शिक्षा तथा साक्षरता विभाग द्वारा 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को उत्तम शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए 'सर्व शिक्षा अभियान' नामक एक बृहत् प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम शुरू किया गया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय की झांकी में बाल केंद्रित प्रणाली, शिक्षा में समाज की सहभागिता, समग्र शिक्षण पद्धति, आधारभूत अवसंरचना के स्तर में सुधार, कम्प्यूटर शिक्षा आदि जैसे कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय

Children Education

Despite enormous progress in terms of increase in the number of schools, teachers and in enrolment since independence, a large number of children still do not attend schools. There are thousands of habitations without a school. In order to address this issue, a massive basic education programme called 'Sarv Shiksha Abhiyan' to provide 8 years of quality education to all children up to 14 years of age has been launched by the Department of Elementary Education and Literacy.

The tableau of Ministry of Human Resource Development focuses on the different aspects of the programme namely, child-centered system, community participation in education, wholesome teaching methods, improving the quality of infrastructure, computer education etc.

Ministry of Human Resource Development

भीमबेटका

भारत का 24वां विश्व धरोहर स्थल भीमबेटका मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में अवस्थित विंध्यपर्वत श्रृंखला में 200 से अधिक चित्रित चट्टानी कंदराओं तथा पथरीली रेतीली-चट्टानी संरचनाओं से युक्त भारत में कला के प्राचीनतम् उदाहरणों में से एक है। भीमबेटका का अर्थ '**भीम के बैठने का स्थान**' है जिसका संबंध महाभारत महाकाव्य से है तथा यह भारत की प्रागैतिहासिक कला का महानतम् खजाना है। भीमबेटका की कला की विशेषताएं प्रकृति से इसकी निकटता, वन्य-पशु आकृतियों तथा शिकार करते हुए दृश्यों की अधिकता हैं जो शिकार करने तथा जंगल से भोज्य सामग्री जुटाने की जीवनयापन शैली को प्रस्तुत करते हैं। कंदराओं में प्राप्त ये बहुसंख्य पेंटिगें—जिनकी पहचान अभी तक आरंभिक मैसोलिथिक काल से लेकर मध्ययुगीन काल तक हो पाई है—न केवल कलात्मक धरोहर का अंश हैं वरन् ये विभिन्न सांस्कृतिक चरणों के दौरान मानवजाति की प्राचीनतम् कलात्मक अभिव्यक्ति का दुर्लभ दस्तावेज हैं। यह सांस्कृतिक उद्विकास पारिस्थितिकीय संतुलन तथा अपरिवर्तित भूस्थिति के अछूते पर्यावरण के मध्य हुआ है।

भीमबेटका गुफाओं को प्रस्तुत करती पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय की झांकी का प्रचुर दृश्यात्मक तथा सांस्कृतिक महत्व है। यह भारतीय संस्कृति की प्राचीनता तथा सृजनात्मक समृद्धि का शानदार प्रतीक है।

पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय

Bhimbetka

India's 24th World Heritage site Bhimbetka situated in the district of Raisen, Madhya Pradesh is one of the earliest records of art in India with over 200 painted rock-shelters and craggy sandstone formation in the Vindhyan range. Bhimbetka meaning **'the sitting place of Bhim'** is associated with the great epic of Mahabharata and is the biggest repository of prehistoric art in India. The art of Bhimbetka is characterized by its closeness to nature, dominance of wild animal figures and hunting scenes representing a hunting-gathering way of life. On the visible surface, the rich profusion of paintings within the rock shelters – identified so far from the early Mesolithic period to the Medieval period – is not only part of an artistic heritage but a rare source of documentation from the earliest creative expressions of mankind through several cultural layers. This cultural evolution has been nurtured in an undisturbed environment : of ecological balances and unaltered topography.

The tableau of Ministry of Tourism & Culture depicting Bhimbetka caves has enormous visual and cultural significance. It is an excellent reminder of the antiquity of Indian culture and its creative exuberance.

Ministry of Tourism & Culture

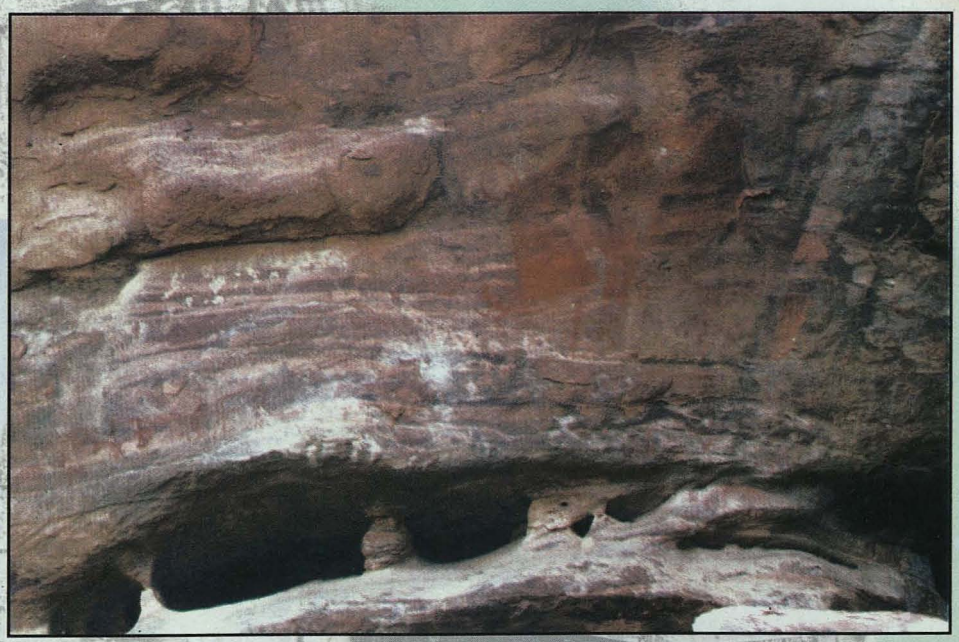

भारत की जीवन-रेखा

आज दूर संचार के क्षेत्र में क्रांति आ गई है। यह ग्रामीण क्षेत्रों में और भी ज्यादा स्पष्ट है जहां यह असीमित समृद्धि और खुशी का वाहक बन चुकी है।

दूर संचार विभाग की झांकी में एक वृहत आधुनिक मोबाइल फोन के माध्यम से दूर संचार क्रांति के उपकरण के रूप में तथा देश के सुदूरवर्ती कोनों में इसकी पहुंच को दिखाते हुए टेलीफोन के महत्व को दर्शाया गया है। झांकी के पृष्ठ भाग में दृश्य-प्रस्तुति के माध्यम से यह दर्शाया गया है कि किस तरह दूर संचार क्रांति आम इन्सान के जीवन को प्रभावित करके उसके जीवन में समृद्धि लाती है। ट्रेलर भाग पर एक ग्राम सेवक-सह-पोस्टमैन को वायरलैस-इन-लोकल लूप फोन के माध्यम से दूरवर्ती ग्रामीण क्षेत्र में दूर संचार क्रांति का लाभ पहुंचाते हुए दिखाया गया है। झांकी में देश के ग्रामीण तथा दूरवर्ती क्षेत्रों तक दूर संचार के लाभ को पहुंचते दर्शाया गया है।

दूर संचार विभाग

Lifeline of India

Telecommunication is ushering in a major revolution today. This is more evident in the rural areas where it is bringing in prosperity and happiness unlimited.

The tableau of Department of Telecommunication shows a larger than life modern mobile phone signifying the importance of the telephone as an instrument of telecom revolution. The trailer through visual presentation depicts how the telecom revolution touches and enhances the life of common man. On the trailer a Gram Sewak-cum-Postman is shown taking the benefits of telecom revolution to the remotest rural areas through Wireless in Local Loop (WLL) phone. The tableau is a powerful portrayal of the benefits of the telecommunication to the rural and remote areas of the country.

Department of Telecommunication

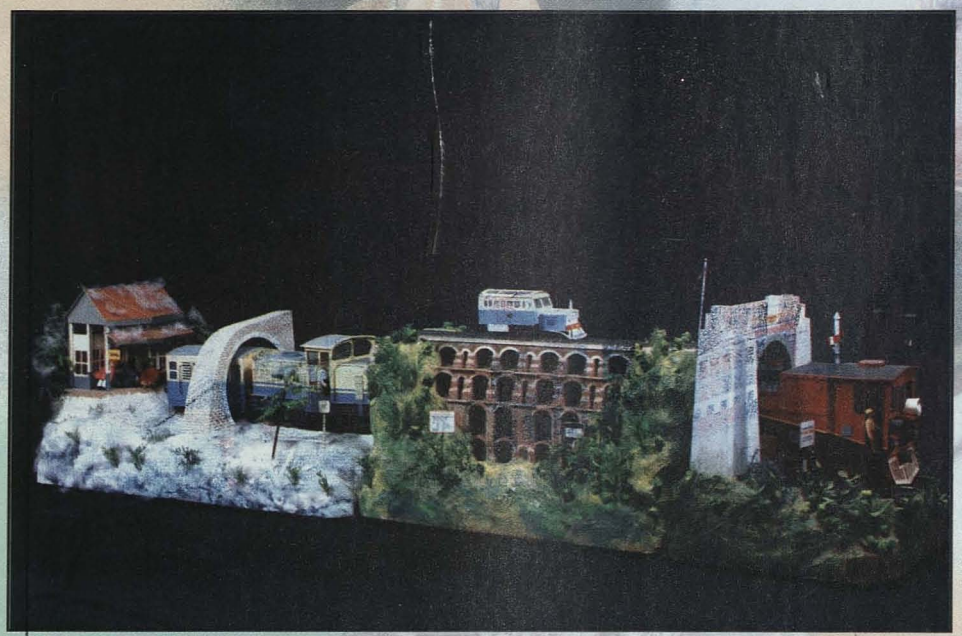

कालका-शिमला हिल रेलवे-शताब्दी

जनसाधारण तथा प्रमुख उद्योग के लिए परिवहन के प्रधान साधन के रूप में रेलवे की राष्ट्रीय जनजीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। कालका-शिमला हिल रेलवे ने वर्ष 1903 में इस शीत-स्वर्ग की ओर अपनी पहली यात्रा शुरू की थी तथा 2003 में इसने एक सौ वर्ष पूरे कर लिए हैं तथा अपनी शताब्दी मना रही है। अत्यधिक सुंदर पर्वतीय स्थलों में से एक शिमला को मैदानों से जोड़ने वाली यह रेल सेवा लाखों यात्रियों के लिए एक नए अनुभव तथा प्रसन्नता का स्रोत है।

रेल मंत्रालय की झांकी में राष्ट्र की सेवा में समर्पित भारतीय रेल का चित्रण किया गया है। झांकी के अग्र भाग में भारतीय रेल के वाष्प इंजन को बारोग सुरंग से बाहर आता दिखाया गया है। प्रथम ट्रेलर में चापाकार कण्डाघाट पुल पर पृष्ठभूमि के साथ रेल कार को दिखाया गया है। दूसरे ट्रेलर में, शिवालिक एक्सप्रेस को सर्दियों के बर्फीले मौसम में शिमला रेलवे स्टेशन से रवाना होते दिखाया गया है।

रेल मंत्रालय

Kalka-Shimla Hill Railways – Centenary

As a principal mode of transport for the common man and core industry, Railways play a significant role in the life of the nation. Kalka-Shimla Hill Railway, starting its journey to a cooler paradise in 1903 has completed one hundred years in 2003 and is celebrating its Centenary. This train service connecting Shimla, one of the most beautiful hill stations with the plains, is a source of novel experience and happiness to millions of passengers.

The tableau of Ministry of Railways depicts Indian Railways in the service of nation. On the tractor, Indian Railways shows a steam engine coming out of Barog Tunnel. In the first trailer, a Rail Car is shown on arched Kandaghat Bridge with landscape. In the second trailer, Shivalik Express is seen leaving Shimla railway station in winter snow.

Ministry of Railways

स्वर्ण-प्रयास

भारतीय खेलों के प्रदर्शन में हाल ही में प्रत्यक्ष सुधार आया है। कॉमन वेल्थ खेल-2002, बुसान एशियाई खेल, पेरिस में विश्व एथलीट चैम्पियनशिप तथा क्वालालम्पुर में हॉकी के एशियाई कप में भारतीय खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन ने देशवासियों की उम्मीदों को जगा दिया है। इस गति को बनाए रखने की आवश्यकता है, जिसके तहत हमारे खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर अपेक्षित ध्यान देकर उन्हें पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराने होंगे, जिनके वे पूरी तरह पात्र हैं। इस झांकी के माध्यम से भारतीय खेलों के नवीन और उज्जवल भविष्य को भारतीय जनता के समक्ष प्रस्तुत करने का यह उपयुक्त क्षण है।

युवा मामले और खेलकूद मंत्रालय की इस झांकी में भारतीय खेलों के इस नए और उज्जवल स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है, जो हमारे खिलाड़ियों को यह संदेश देती है कि ओलिम्पिक खेलों के मैदान में उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए संपूर्ण राष्ट्र उनके साथ है।

युवा मामले एवं खेलकूद मंत्रालय

Go For Gold

The performance of Indian Sports has witnessed a discernible upswing in recent years. The recent splendid performance of Indian sportspersons in the Commonwealth Games 2002, Busan Asian Games, World Athletics Championship in Paris and in the Asia Cup in Kuala Lumpur has raised the expectation of the countrymen high. The tempo thus created needs to be sustained with performance of our sportspersons being given the desired focus and visibility something they richly deserve. Presentation of this new and brighter face of Indian sports before the Indian public through a Tableau on Rajpath is a befitting moment.

The tableau of Ministry of Youth Affairs and Sports presenting the new and brighter face of Indian sports conveys the message to our sportspersons that the entire nation is behind them in their pursuit of excellence.

Ministry of Youth Affairs & Sports

प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना

ग्रामीण सड़कें जीवन शैली में आश्चर्यजनक बदलाव ला देती हैं। बेहतर सड़कों से शहरों में स्थित कार्यस्थलों में प्रतिदिन आना-जाना आसान हो जाता है, पलायन की दर कम हो जाती है, ग्रामीण रोजगार के अवसर बढ़ते हैं तथा परिवारिक जीवन बेहतर होता है। ग्रामीण क्षेत्रों से जुड़ जाने पर बेहतर खाद्य वस्तुओं और लंबे समय तक उपयोग वाली वस्तुओं का पहुंचना आसान हो जाता है, जिससे जीवन स्तर में सुधार होता है। इसको देखते हुए सरकार ने 25 दिसम्बर, 2000 को प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना नामक महत्वाकांक्षी योजना का आरंभ किया है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना-60,000 करोड़ रुपए के व्यय की एक केन्द्र प्रायोजित योजना है जिसमें ऐसे सभी गांवो को, जहां 1000 से अधिक आबादी है, अगले 3 वर्षों के भीतर तथा ऐसे सभी गांवों को, जहां 500 से अधिक आबादी हो, 2007 तक पक्की बारहमासी सड़कों से जोड़ने का लक्ष्य है, जो कि पूर्ण जल निकासी व्यवस्था से पूर्ण है।

इस नई सड़क व्यवस्था से ग्रामीण क्षेत्र को प्राप्त प्रत्यक्ष लाभ तथा इन सड़कों के पास-पड़ोस की जनता में 'सुखद अनुभूति' के वातावरण को ग्रामीण विकास मंत्रालय की झांकी में दर्शाया गया है।

ग्रामीण विकास मंत्रालय

Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana

Rural roads change life patterns dramatically. Improved connectivity makes daily commutation to urban work places easier, reduces migrations, increases rural employment and improves family life. Rural connectivity also enables increased penetration of better quality consumer items and durables, thus improving quality of life. Keeping this in view the government has launched Pradhan Mantri Gram Sadak Yojana (PMGSY) on 25th December 2000. PMGSY, a Centrally Sponsored Scheme involving an expenditure of Rs.60,000 Crores is aimed at connecting every habitation that has a population of more than 1000 people within the next 3 years and every village with a population of more than 500 people by the year 2007 through good all-weather roads, complete with cross drainage.

Visible benefits accruing to rural areas from this new connectivity and a 'feel good' atmosphere in the entire neighbourhood of the road is depicted in the tableau of Ministry of Rural Development.

Ministry of Rural Development

बालिका को पलने-बढ़ने दो

बालिकाओं के प्रति भेद-भाव आज सामाजिक चिंता का विषय बना हुआ है जिसने देश के कई भागों में सामाजिक असंतुलन पैदा कर दिया है। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की झांकी में **''बेटी हो या बेटा रखो परिवार छोटा''** नामक चुटीले संदेश के माध्यम से छोटे परिवार के फायदों संबंधी जागरूकता पैदा करने का प्रयास विश्व जनसंख्या दिवस पर 11 जुलाई, 2003 को शुरू किए गए राष्ट्रीय प्रतिबद्धता अभियान का भाग है।

इस झांकी में जीवन के विभिन्न चरणों के दौरान बालिका के विकास में सहायक परिवार की भूमिका को चित्रित किया गया है। इस झांकी का उद्देश्य आधुनिक भारत की सफल युवतियों की उपलब्धियों को दर्शाते हुए जनता में लिंग-भेद तथा बालिका-महत्व से संबंधित मुद्दों पर जागरूकता पैदा करना और इससे संबंधित सूचना का प्रचार-प्रसार करना है। इस क्षेत्र की अनुकरणीय हस्ती सानिया मिर्जा की उपस्थिति में झांकी का यह नारा **''ऐसी बेटी के रहते क्या जरूरत है बेटे की''** मानो झांकी के संपूर्ण भाव को अपने में समेटे हुए है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय

Save the Girl Child

The discrimination against the girl child today has become an issue of social concern and has created social imbalance in many parts of our country. The theme of the tableau of Ministry of Health & Family Welfare is a part of a National Commitment Campaign launched on 11th July 2003 on World Population Day with an attempt to promote awareness on the merits of a small family through crisp message **"Beti Ho Yaa Beta Rakkho Parivar Chhota"**.

The tableau focuses on the role of a family in supporting the development of the Girl Child through different stages of life. The tableau is aimed at creating awareness, disseminating information and sensitizing masses on issues pertaining to gender discrimination and the importance of girl child by highlighting the young girl achievers of modern India. The slogan **"Aise Beti Ke Rehte Kya Zaroorat Hai Bete Ki"** and the presence of role model Sania Mirza sums up the theme with.

Ministry of Health & Family Welfare

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग

खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में खादी तथा ग्रामीण उद्योग के विकास के लिए कार्यक्रमों की योजना बनाने, उनको प्रोत्साहित करने तथा उनका क्रियान्वयन करने में लगातार महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग की इस झांकी में हमारे ग्रामीण, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन में खादी की महत्ता को दर्शाया गया है। खादी और ग्रामोद्योग आयोग की ग्रामीण भारत की उन्नति में उत्प्रेरक की भूमिका रही है, जिसने कृषि ग्रामोद्योग को बढ़ावा दिया है तथा स्वतंत्र भारत की भावना को पोषित किया है। खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के उद्देश्य तथा ग्रामीण भारत की उन्नति में उसकी भूमिका को विभिन्न दृश्यों द्वारा सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

इस झांकी में खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग का भारतीय जीवन-शैली के अभिन्न अंग के रूप में तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने तथा उनको आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका का सफल तथा प्रभावशाली चित्रण किया गया है।

कृषि एवं ग्रामीण उद्योग मंत्रालय
(खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग)

Khadi Evam Gramodyog Ayog

Khadi and Village Industries Commission (KVIC) has been constantly playing a vital role in planning promotion and implementation of programmes for the development of khadi and village industries in rural areas. The tableau of KVIC highlights the importance of Khadi in our lives in rural, social, economical and cultural fronts. KVIC is a catalyzing factor in the growth of rural India, giving thrust to agro-rural industries and nurturing the spirit of a free India. KVIC's objectives and role in uplifting rural India has been nicely portrayed through various visual presentations.

The tableau is an impressive depiction of KVIC as an integral part of the Indian life style and its important role in generating employment in rural areas and providing financial assistance to them.

Ministry of Agro & Rural Industries
(K.V.I.C.)

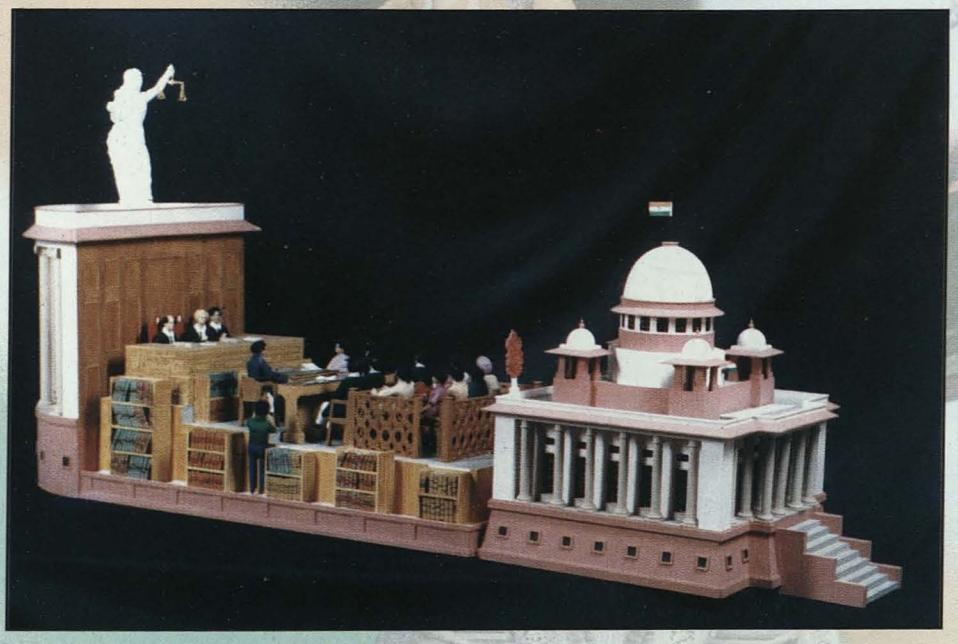

भारत का सर्वोच्च न्यायालय-विधि एवं न्याय का सतत्-सतर्क प्रहरी और विधि के शासन का प्रतीक

न्याय विभाग की झांकी में विधि एवं न्याय के सतत् सतर्क प्रहरी और विधि के शासन के प्रतीक-भारत के सर्वोच्च न्यायालय को प्रस्तुत किया गया है। अग्र भाग में सर्वोच्च न्यायालय भवन का बाहरी ढांचा दिखाया गया है। पृष्ठ भाग में सर्वोच्च न्यायालय की एक पीठ के पूर्ण सत्र का दृश्य है और अपने आसनों पर बैठे न्यायधीशों के एक पैनल के समक्ष अधिवक्ता पोशाकों में अपने मुकदमें की पैरवी कर रहे हैं, तथा बगल में रखे रैक में विधि की पुस्तकों का ढेर दिखाया गया है। झांकी के सबसे पिछले भाग में मुद्रा और आकार में किंचित परिवर्तन युक्त "भारत माता" की एक त्रि-आयामी प्रतिमा का चित्रण किया गया है, जिसके हाथ में न्याय की तराजू है।

न्याय विभाग

The Supreme Court of India – The ever vigilant Sentinel of Law & Justice – Representing Rule of Law

The tableau of Department of Justice presents the Supreme Court of India, the Ever vigilant Sentinel of Law & Justice, Representing Rule of Law. Exterior structure of the Supreme Court building is shown on the tractor portion. On the trailer portion is seen a scene of a bench of Supreme Court in full session with advocates in robes explaining their case to a panel of Judges in their respective seats and law books heaped around in a side-rack. The rear portion of the tableau depicts sculpture with some variations of posture and size of "Bharat Mata" with the scale of justice.

Department of Justice

तीज

उत्तरी भारत का अत्यधिक लोकप्रिय त्यौहार 'तीज' हरियाली तीज नामक त्यौहार पर आधारित है। सावन का महीना (जुलाई-अगस्त) आते ही मानसून की बयार के साथ ही राजस्थान में तीज का त्यौहार मनाया जाने लगता है। महिलाएं रंगीन तथा शानदार पोशाकें पहनकर हाथों में मेंहदी लगाए हुए पैरों को गहनों से सजाकर बरसात में झूला झूलती हैं।

अग्र भाग के सिरे पर राजस्थानी मूर्तिकला का प्रतीक एक हाथी है तथा बगल के पैनलों पर एक मोर का जोड़ा भी दिखाया गया है। पृष्ठ भाग पर एक सुंदर सा बाग है जिसके मध्य में फव्वारा और समाधि बनाई गई है जो राजस्थानी किले की एक प्रमुख विशेषता है। पृष्ठ भाग के बगल वाले पैनल पर विशिष्ट राजस्थानी चित्रकारी के दृश्य हैं।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा प्रस्तुत फूलों की इस झांकी में इस त्यौहार के हर्ष और उल्लास के वातावरण के चित्रण का प्रयास किया गया है।

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग

Teej

'Teej', the most popular festival of Northern India is based on the festival of Haryali Teej. The Teej festival is celebrated in Rajasthan during Monsoon in the month of Shravan (July-August). The tableau depicts the celebration of Teej Festival with women dressed up in colorful and gorgeous costumes, *mehandi* designs on hands and feet bedecked with jewellery swinging in the rains.

On top of the tractor is an elephant, the symbol of Rajasthani sculpture and a pair of peacock is also shown on the side panels. On the trailer, one beautiful garden and tomb with fountain in the middle is created which is an exclusive feature of a Rajasthani Fort. On the side panel of trailer, scenes from typical Rajasthani paintings are shown.

The floral tableau presented by the Central Public Works Department (C.P.W.D.) tries to capture the gay abandon of this festival.

Central Public Works Department

बच्चों की प्रस्तुति

Children's Pageant

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार, 2003 के विजेता बच्चे

नाम	राज्य
मास्टर सी. वनलालरूइया* (मरणोपरांत)	मिजोरम
मास्टर रियाज अहमद***	लखनऊ
कुमारी रमसीना आर.एम.**	केरल
मास्टर लाल राम दिनथरा**** (मरणोपरांत)	मिजोरम
मास्टर असित रंजन सामल**** (मरणोपरांत)	उड़ीसा
मास्टर विवेक पुरकायस्थ****	असम
मास्टर राम नयन यादव	उत्तर प्रदेश
मास्टर सत्यम महेन्द्र खांडेकर	महाराष्ट्र
कुमारी चुनेश्वरी कोठालिया	छत्तीसगढ़
मास्टर नितिन उत्तमराव काकडे	महाराष्ट्र
मास्टर ध्यानेश्वर माणिकराव काकडे	महाराष्ट्र
मास्टर राजू नामदेव काकडे	महाराष्ट्र
मास्टर हरीश राणा	उत्तरांचल
मास्टर प्रताप विकुभाई खाचर	गुजरात
कुमारी स्कीवतीदारिस लिंखोई	मेघालय
मास्टर अजित कुमार पी.टी.	केरल
मास्टर सनीश के.एस.	केरल
कुमारी सुरम्या यू.आर.	केरल
कुमारी नीलम रानी	हरियाणा
कुमारी सरिता त्यागी	हरियाणा
कुमारी सुनीता देवी सिंहदोया	हरियाणा
कुमारी स्वाति त्यागी	हरियाणा
कुमारी सुषमा रानी	हरियाणा
मास्टर रामसाधारण	छत्तीसगढ़
मास्टर थोताकुरा महेश	आंध्र प्रदेश
मास्टर जी. क्रान्ति कुमार	आंध्र प्रदेश

* भरत पुरस्कार
** गीता चोपड़ा पुरस्कार
*** संजय चोपड़ा पुरस्कार
**** बापू गयाधानी पुरस्कार

Winners of Natinal Award for Bravery - 2003

Name	State
Master C. Vanlalhruaia* (Posthumous)	Mizoram
Master Riyaz Ahmed***	Lucknow
Km. Ramseena R.M.**	Kerala
Master Lalramdinthara****(Posthumous)	Mizoram
Master Asit Ranjan Samal****(Posthumous)	Orissa
Master Vivek Purkayastha****	Assam
Master Ram Nayan Yadav	Uttar Pradesh
Master Satyam Mahendra Khandekar	Maharashtra
Km. Chuneshwari Kothalia	Chhattisgarh
Master Nitin Uttamrao Kakde	Maharashtra
Master Dyaneshwar Manikrao Kakade	Maharashtra
Master Raju Namdev Kakde	Maharashtra
Master Harish Rana	Uttranchal
Master Pratap Vikubhai Khachar	Gujarat
Km. Skiewtidaris Lyngkhoi	Meghalaya
Master Ajith Kumar P.T.	Kerala
Master Saneesh K.S.	Kerala
Km. Suramya U.R.	Kerala
Km. Neelam Rani	Haryana
Km. Sarita Tyagi	Haryana
Km. Sunita Devi Singhdoya	Haryana
Km. Swati Tyagi	Haryana
Km. Sushma Rani	Haryana
Master Ramsadharan	Chhattisgarh
Master Thotakura Mahesh	Andhra Pradesh
Master G. Kranthi Kumar	Andhra Pradesh

*** Bharat Award**
**** Geeta Chopra Award**
***** Sanjay Chopra Award**
****** Bapu Gayadhani Award**

स्कूली बालिकाओं का बैंड

स्कूली बच्चों की यह सांस्कृतिक प्रस्तुति सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों : श्री गुरू तेग बहादुर खालसा गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सब्जी मंडी, दशमेश पब्लिक स्कूल, विवेक विहार और न्यू ग्रीन फील्ड पब्लिक स्कूल, साकेत की बालिकाओं के बैंड के नेतृत्व में आगे बढ़ रही है। यह बैंड **'कारगिल के वीर'** धुन बजा रहा है।

Band By School Girls

The cultural pageant of school children is heralded by a band of girls drawn from Government aided Schools: Shri Guru Teg Bahadur Khalsa Girls Senior Secondary School, Sis Ganj; Guru Nanak Girls Senior Secondary School, Subzi Mandi; Dashmesh Public School, Vivek Vihar; and New Green Field Public School, Saket. The band is playing the tune **'KARGIL-KE-VEER'**.

ध्वज वाहक - बालिकाएं

बालिकाओं के इस मार्च पास्ट में गवर्न्मेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सैक्टर-4, सं. 1, डॉ. अम्बेडकरनगर; सर्वोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, समालखा; सर्वोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, महिपालपुर; सर्वोदय कन्या विद्यालय, मालवीय नगर; सलवान गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजेन्द्र नगर; विक्टोरिया गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजपुर रोड; जी.आर.एम. सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल, निलोठी मोड़, नागलोई; अर्वाचीन भारती भवन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, विवेक विहार; माउंट आबु पब्लिक स्कूल, सैक्टर-5, रोहिणी; सेंट मार्गरेट सीनियर सेकेंडरी स्कूल, प्रशांत विहार; मदर डिवाइन पब्लिक स्कूल, सैक्टर-3, रोहिणी और हैप्पी होम पब्लिक स्कूल, सैक्टर-11 रोहिणी के बच्चे भाग ले रहे हैं।

Flag Bearers – Girls

Children participating in the March Past of girls are drawn from Government Girls Senior Secondary School, Sector-4, No.1, Dr. Ambedakar Nagar; Sarvodaya Senior Secondary School, Samalakha; Sarvodaya Senior Secondary School, Mahipalpur; Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Malviya Nagar; Salvan Girls Senior Secondary School, Rajendra Nagar; Victoria Girls Senior Secondary School, Rajpur Road; G.R.M. Senior Secondary Public School, Nilothi More, Nangloi; Arawachin Bharti Bhavan Senior Secondary School, Vivek Vihar; Mount Abu Public School, Sector-V, Rohini; Saint Margaret Senior Secondary School, Prashant Vihar; Mother Divine Public School, Sector-3, Rohini; and Happy Home Public School, Sector XI, Rohini.

ध्वज वाहक - बालक

मार्च पास्ट में गवर्न्मेंट ब्वॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजौरी गार्डन (मेन); जैन संस्कृत बाल विद्यालय, कूंचा सेठ; कमर्शियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दरियागंज; सलवान ब्वॉयज़ सीनियर सेकेंडरी स्कूल, राजेन्द्र नगर; अर्वाचीन भारती भवन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, विवेक विहार; माउंट आबु पब्लिक स्कूल, सैक्टर-5, रोहिणी; हैप्पी होम पब्लिक स्कूल, सैक्टर-11, रोहिणी; सचदेव पब्लिक स्कूल, सैक्टर-13, रोहिणी; रेनबो इंगलिश सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सी ब्लॉक, जनकपुरी; संत हरि दास सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बनि कैंप, नजफगढ़; दशमेश पब्लिक स्कूल, विवेक विहार और मदर डिवाइन पब्लिक स्कूल, सैक्टर-3, रोहिणी के बालक शामिल हैं।

Flag Bearers – Boys

Children Participating in the March Past of boys are drawn from the Government Boys Senior Secondary School, Rajouri Garden (Main); Jain Sanskrit Bal School, Kooncha Seth; Commercial Senior Secondary School, Darya Ganj; Salwan Boys Senior Secondary School, Rajender Nagar; Arwachin Bharti Bhavan Senior Secondary School, Vivek Vihar; Mount Abu Public School, Sector V, Rohini; Happy Home Public School, Sector XI, Rohini; Sachdeva Public School, Sector XIII, Rohini; Rainbow English Senior Secondary School, C Block, Janakpuri; Sant Hari Das Senior Secondary School, Bani Camp, Najafgarh; Dashmesh Public School, Vivek Vihar; and Mother Divine Public School, Sector-III, Rohini.

स्कूली बच्चों का बैंड

बैंड में शामिल ये बालक जैन समनोपासक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, सदर बाजार; एस.एम. जैन मॉर्डन सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कमला नगर; रेयान इंटरनेशनल स्कूल, रोहिणी; विवेकानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल, आनंद विहार; महाराजा अग्रसेन पब्लिक स्कूल, अशोक विहार और बाल मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, डिफेंस एन्कलेव से हैं। यह बैंड आकाशवाणी दिल्ली के संगीत निर्देशक पंडित शिव प्रसाद द्वारा रचित 'सुकृति' नामक धुन बजा रहा है।

Band by School Boys

The band of boys is drawn from the Jain Samnopasak Senior Secondary School, Sadar Bazar; S.M. Jain Modern Senior Secondary School, Kamla Nagar; Ryan International School, Rohini; Vivekanand Senior Secondary School, Anand Vihar; Maharaja Agarsen Public School, Ashok Vihar; and Bal Mandir Senior Secondary School, Defence Enclave. The band is playing the tune **'Sukariti'** composed by Pt. Shiv Prasad, Music Director, Akashvani, Delhi.

लक्ष्य

प्रिंस पब्लिक स्कूल, सेक्टर-24, रोहिणी, दिल्ली के छात्र अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति 'लक्ष्य' में—हमारी मातृ-भूमि की कुछ विशेषताओं और अनेकता में एकता, वसुधैव कुटुम्बकम्, सांप्रदायिक सौहार्द्र, अहिंसा आदि पंचशील के सिद्धांतों को प्रस्तुत कर रहे हैं। नृत्य तथा गीत की यह प्रस्तुति 'लक्ष्य' हमारे देश की सर्वतोमुखी प्रगति का चित्रण है। हमें उन्हें भी याद करना चाहिए तथा नमन करना चाहिए, जिन्होंने हमारी मातृ-भूमि के लिए अपने प्राण न्योछावर किए हैं तथा कठोर परिश्रम करते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहना चाहिए।

गद्दी नृत्य

हिमाचल प्रदेश के 'गद्दी' परंपरागत चरवाहे हैं और उनका मुख्य पेशा है भेड़ों को पालना। गद्दी, सादे तथा मेहनती लोग होते हैं जो परंपरागत संगीत और नृत्य के भी शौकीन हैं। सेंट एंड्रूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पहाड़गंज, दिल्ली के छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'गद्दी' नृत्य विभिन्न रंग-रूपों में लुभावने सौंदर्य को प्रस्तुत करता है, जहां एक गद्दी अपनी पत्नी से मेले में चलने के लिए मनुहार करता दिखायी देता है। यह सुनकर गद्दन के दिल से खुशी के मारे सुरीले गीत फूट पड़ते हैं, किंतु वह शिकायती लहजे में कुछ और ही कहती है।

हेरी लिम

पूर्वोत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, दीमापुर से आए बच्चों की यह टोली 'हेरी लिम' नृत्य प्रस्तुत कर रही है, जिसे बसंत के त्यौहार में बालक-बालिकाओं द्वारा किया जाता है। इस फुर्तीले नृत्य का संदेश है: 'आओ बालाओं आओ, नाचो-गाओ मौज मनाओ। यह मौज-मस्ती का समय है। मां बन जाने के बाद जवानी के दिनों के समान आजादी से मौज-मस्ती करना संभव नहीं हो सकेगा। इसलिए आओ नाचें, खुशी मनाएं और मौज-मस्ती करते हुए अपने युवा काल का बेहतरीन उपयोग करें'।

स्वनिर्भरता की पुकार

भारतीय युवाओं की यह पुकार आत्मनिर्भरता तथा विश्व-शक्ति बनने के लिए अपने प्राकृतिक और मानव-संसाधनो का भरपूर इस्तेमाल करने का आह्वान है। बालक और बालिकाएं रंग-बिरंगी पोशाकों में नृत्य तथा योग, एयरोबिक्स, क्रिकेट और कंप्यूटर आदि विभिन्न क्रियाकलाप कर रहे हैं। डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, युसूफ सराय, नई दिल्ली के प्रफुल्लित छात्र-छात्राएं 'स्व-निर्भरता की पुकार' प्रस्तुत करते हुए 'जय युवाशक्ति, जय विज्ञान' का संदेश देना चाहते हैं।

Lakshya

The students of Prince Public School, Sector – 24, Rohini, Delhi in their cultural presentation 'Lakshya' – depicts the qualities of our Mother Land and have also tried to portary various principles of panchsheel followed like unity in diversity, universal brotherhood, communal harmony, non-violence etc. 'Lakshya', the dance and song presentation depicts the all-round progress of our country. We should also remember and salute those who laid their lives for our motherland and march forward to attain our aim by hard work.

Gaddi Dance

'Gaddis' of Himachal Pradesh are traditional shepherds and rearing of sheep is their main vocation. Gaddis, simple and hardworking people are also fond of traditional music and dance. The 'Gaddi' dance presented by the students of St. Andrews Scots Senior Secondary School, Patparganj, Delhi captures the alluring beauty in all its variant hues as a Gaddi adoringly asks his consort to go to the fair. The Gaddan's heart bursts into a melodious song of mirth on hearing this but she says something in a complaining note.

Herie Lim

The Children Contingent from North East Zone Cultural Centre, Dimapur is presenting 'Herie Lim' dance form which is performed during Spring Festival by the boys and girls. The message of this zealous dance is: 'Dear Lasses come let us dance and enjoy ourselves. This is the time to enjoy ourselves. After attaining motherhood you will not be able to indulge yourself in carefree merrymaking as in the days of youth. So let us dance and enjoy ourselves in festivity and merrymaking and make the best use of our youth'.

Swanirbharta ki Pukar

The cry of Indian youth is to use its natural & human resources to its fullest to become self-reliant and World Power. Girl and boys dressed up in colorful dresses are performing dance and various activities – Yoga, Gymnastics, Aerobics, Cricket, Computer etc. Bubbling students of D.A.V. Model School, Yusuf Sarai, New Delhi presenting "Swanirbharta Ki Pukar" want to convey the message 'Hail Youth, Hail Science'.

राई नृत्य

'राई' मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र का एक लोकप्रिय नृत्य है जो कि मुख्यत: महिला नृत्य है। युद्ध में विजयी सेनाओं के लौटने पर जीत के जश्न के रूप में इस नृत्य का सूत्रपात प्राचीन समय में हुआ। वर्ष भर किया जाने वाला यह नृत्य बुंदेलखंड के लोगों के हर्ष तथा उल्लास का प्रतीक है। *अलगोज़ा, मृदंग* तथा *ढफली* इस नृत्य में इस्तेमाल किए जाने वाले प्रमुख वाद्य यंत्र हैं। उत्तर-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, इलाहाबाद द्वारा जीत के इस जश्न को प्रस्तुत करता है।

केरल की परंपरागत कलाएं

केरल सोसाइटी स्कूल, विकासपुरी, दिल्ली के छात्रों द्वारा प्रस्तुत इस नृत्य में केरल की परंपरागत कलाओं अर्थात् 'कलरियप्पायत', 'कथाकली' और 'मोहिनीअट्टम', की झलक मिलती है। 'कलरियप्पायत' केरल की प्राचीन विशिष्ट युद्ध-कला है जो बच्चों को शारीरिक प्रशिक्षण, हथियार सहित/हथियार के बिना लड़ने, श्वसन-अभ्यास और ध्यान-क्रियाएं सीखने में समर्थ बनाती है। 'कथाकली', केरल का एक सुप्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य है, जिसका उद्गम पौराणिक है और इस नृत्य में नर्तक चेहरे की भंगिमाओं, शारीरिक हरकतों के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं। 'मोहिनीअट्टम' भी केरल का एक नृत्य है, जिसमें नर्तक रंग-बिरंगी और परंपरागत पोशाकें पहनकर अत्यनत आकर्षक ढंग से नृत्य की विभिन्न शैलियों और भंगिमाओं का चित्रण करते हैं

हरियाणवी नृत्य

हरियाणा को सदैव ही देश भक्ति की जीवंत-गाथा माना जाता रहा है। राजकीय सर्वोदय कन्य विद्यालय सं. 1, नरेला, दिल्ली की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत हरियाणवी नृत्य इसी भाव पर आधारित है। इस परंपरागत नृत्य में, एक बहन अपने वीर भाई के मातृ भूमि के प्रति बलिदान भाव, भक्ति तथा समर्पण की भावना पर गर्वित होते हुए गा उठती है :

'मेरा बीरा पल्टण में जा रहया सै, लड़न लड़ाई बोडर पै;
कारगिल में तोप चला रहया सै, गोरमेंट के ओडर पे।'

जल का महत्व

यह संसार पंचतत्वों अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु, जो जीवन के आधार हैं, से मिलकर बना है। इन पंचतत्वों में से जीवन के अस्तित्व और विकास के लिए जल सबसे अधिक अनिवार्य है। प्रसिद्ध कवि रहीम ने जल के महत्व का इस प्रकार वर्णन किया है **''रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून; पानी गए न ऊबरे, मोती, मानुष, चून।''**

वास्तव में, पानी की प्रति व्यक्ति उपलब्धता दिनों-दिन घट रही है। इसे ध्यान में रखकर, सभी प्रमुख नदियों को जोड़ने का केंद्र सरकार का प्रस्ताव बहुत ही जरूरी है। कमल मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल, मोहन गार्डन, नई दिल्ली के बच्चों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से मानवजाति और प्रकृति के बने रहने के लिए पानी के महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

Raee Dance

'Raee', primarily a female dance is a popular dance form in Bundelkhand region of Madhya Pradesh and Uttar Pradesh. The dance has originated during ancient times for celebrating victories when the armed forces returned victorious after wars. Danced throughout the year, it conveys the spirit of joy and exuberance of the people of Bundelkhand. Algoza, Mridanga and Daphali are the main musical instruments used in this dance. North Central Zone Cultural Centre, Allahabad presents the celebration of victory.

Traditional Art Forms of Kerala

The performance by the students of Kerala Society School, Vikas Puri, Delhi gives a glimpse of the traditional art forms of Kerala viz. 'Kalariyappayat', 'Kathakali' and 'Mohiniattam'. 'Kalariyappayat' – the exclusive martial art legacy of Kerala enables children to learn the physical training, armed/unarmed combat, breathing exercise, forms of meditation. 'Kathakali', a well-known classical dance form of Kerala having mythological origin enables the dancer to expresses his emotions through facial gestures and bodily movements. 'Mohiniattam' also a dance form of Kerala, dancers dance dressed up in colorful and gorgeous costumes.

Haryanvi Dance

Haryana has always been considered as the live saga of the patriotism. Haryanvi Dance - the theme of presentation by the girl students of Rajkiya Sarvodaya Kanya Vidylaya No. 1, Narela, Delhi is based on this spirit. In this traditional dance, a sister is so proud of his warrior brother's sense of sacrifice, devotion and commitment to the Mother Land that she exclaims:

'Mera beera paltan mein ja rahya sae, ladan ladai boder pae; Kargil mein toap chala rahya sae, Gorment ke oder pae'.

Essence of Water

The Universe is the amalgamation of five elements i.e. Earth, Water, Fire, Sky and Air – the basis of life. Out of five elements, the water is more indispensable for life's existence and development. Renowned poet Rahim has described the significance of water thus: **"Rahiman Pani Rakhiye, Bin Pani Sab Soon; Pani Gaye Na Ubrey, Moti, Manush, Choon".**

As a matter of fact, per capita availability of water is decreasing day by day. Keeping this in view, the Central Government's proposal to connect all major rivers is absolute necessary. The children of Kamal Model Senior Secondary School, Mohan Garden, New Delhi through their presentation attempts to highlights the importance of water for the survival of mankind and nature. Sambhalpuri Dance

संभलपुर का दुलदुली नृत्य

'दुलदुली' लोगों के दिलों को गहराई तक झंकृत कर देने वाला अनुनाद है, 'निसान' नामक ताल वाद्ययंत्रों के संयोजन से निकलने वाला गहरा स्वर। ये वाद्ययंत्र 'ढोल', 'तासा' एवं 'झांज' जैसे ताल वाद्ययंत्रों के साथ बजाए जाते हैं। उड़ीसा राज्य के पश्चिमी भाग में स्थित संभलपुर क्षेत्र का खास कर्णप्रिय लोक संगीत पैदा करने के लिए इनके साथ मुंह से बजाए जाने वाले वाद्ययंत्र, 'मुहुरी' और बांसुरी बजाए जाते हैं। पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र से बच्चे अपनी इस रचना में बाजनिया, डालखाई तथा नचनिया, पर्वा तथा अन्य लोक नृत्य, जिन्हें सामूहिक रूप से दुलदुली नृत्य कहते हैं, पेश कर रहे हैं।

Sambhalpur's Dulduli Dance

'Dulduli', the vibration which goes deep into the hearts of people for its deep bass beating sound produced by a group of Rhythm Instruments called 'NISAN'. These instruments are played along with rhythm instruments like 'Dhol', 'Tasa', & 'Jhanj', 'Muhuri' and flute. These blowing instruments are played alongwith to produce the typical melodious folk music forms of Sambalpur, the western part of Orissa State. In their composition, the children of East Zone Cultural Centre performs Bajania, Dalkhai and Nachnia, Parva and other folk dance form collectively called Dulduli dance.

कोया नृत्य

कोया आदिवासी मुख्यत: पश्चिमी गोदावरी, पूर्वी गोदावरी, खम्माम तथा वारंगल जिलों के पर्वतीय क्षेत्रों के निवासी हैं परंतु थोड़े-बहुत आंध्र प्रदेश के आदिलाबाद तथा करीम नगर जिलों में भी पाए जाते हैं। कोया लोग उत्सवों तथा विवाह-समारोहों के दौरान (पेरामाकोकाटा) बिसन-शृंग नृत्य नामक फुर्तीला तथा रंगारंग नृत्य करते हैं। दक्षिणी जोन सांस्कृतिक केंद्र, आंध्र प्रदेश की इस रचना में कोया नृत्य प्रस्तुत किया गया है जिसमें नर्तक अपने सिर पर बिशन के सींग धारण करते हैं, रंगीन पोशाक पहनते हैं तथा सिलेंडर के आकार की ढोलक की ताल से ताल मिलाकर नृत्य करते हैं।

Koya Dance

The Koyas are tribals mainly inhabitating the hilly areas of West-Godavari, East-Godavari, Khammam and Warangal districts and sparingly found in Adilabad and Karim Nagar districts of Andhra Pradesh. Koyas perform robust and colorful dance called (Peramakokata) Bison horn dance during festive and marriage ceremonies. The composition of South Zone Cultural Centre presents Koya dance in which the men put on Bison horn on head, wear colorful dress and dance with the rhythmic beat of cylindrical drum.

बरेदी नृत्य

दक्षिण-मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर द्वारा रचित 'बरेदी' नृत्य का देश, विशेषत: मध्यप्रदेश के बुंदेलखण्ड, की कृषि-पशु संस्कृति से गहरा संबंध है। बरेदी लोक नृत्य तथा गीतों का आयोजन दीपावली (कार्तिक अमावस्या) से कार्तिक पूर्णिमा के पखवाड़े के दौरान किया जाता है। इस नृत्य में खासकर इसी अवसर के लिए तैयार विशिष्ट प्रकार का पहनावा पहने हुए आठ से दस नृतक होते हैं। एक नृतक 'बरेदी' नामक गीत से दो लाइनें गाता है तथा अन्य कलाकार जोरदार तथा उल्लासपूर्ण नृत्य प्रस्तुत करते हैं।

Baredi Dance

The composition of South Central Zone Cultural Centre, Nagpur, 'Baredi' dance is closely related to the cattle-farm culture of our country, especially of Bundelkhand in Madhya Pradesh. The Baredi folk dance and songs are performed during the fortnight commencing from Deepawali (Kartik Amavasya) to Kartik Poornima. In this dance, one of the eight to ten performers wearing a typical sort of attractive dresses specially meant for this occasion, recites two lines from the poem called 'Baredi, and the other participants present a vigorous and sprightly dance.